शांतिवन। ग्लोबल ऑडिटोरियम में आयोजित सात दिवसीय 'डायमण्ड प्रोजेक्ट फॉर डायबिटीज़ मैनेजमेंट' कार्यक्रम का संस्था के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर के साथ दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सिरोही के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुशील परमार, कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय, डॉ. प्रताप मिड्ढ़ा, ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह तथा अन्य।

नगर भरतपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् चित्र में विधान सभा के अध्यक्ष कैलाश चन्द्र मेघवाल, स्थानीय विधायक अनीता सिंह, पार्षद प्रेम कपूर, ब्र.कु. हीरा, ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु तारेश तथा अन्य।

फिरोज़ाबाद-उ.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मेयर नूतन राठौर, पूर्व चेयरमैन मंगल सिंह राठौर, पार्षद हरिओम वर्मा, पार्षद प्रमोद राजौरिया तथा ब्र.कु. खुशी।

बिजनौर-उ.प्र.। हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस मेले का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. इंद्रजीत सिंह एवं ब्र.कु. सरला। साथ हैं ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु. भारत भूषण, ब्र.कु. जगपाल तथा अन्य।

कायमगंज-फर्रूखाबाद(उ.प्र.)। 'चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' के उद्घाटन कार्यक्रम में थाना अध्यक्ष रामशिया मौर्य एवं दरोगा नीलकमल सिंह को शिव आमंत्रण पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मिथलेश। साथ हैं ब्र.कु. धर्मेन्द्र।

नेपाल-राजविराज। सप्तरी जिला कारागार में ज्ञानयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए एस.एस.पी. हरिभक्त प्रजापति, जेलर सत्यनारायण यादव, ब्र.कु. भगवती तथा अन्य।

हमारे बोल संगीत की तरह मधुर हों

गतांक से आगे...

संगीत की तरह भगवान ने हर बोल बोलने के पहले, हमें भी भीतर में बहुत से वाद्य दिए हैं, ताकि हर बोल हमारा मधुर निकले। देखा जाए तो ये दाँतों की पोज़ीशन को देखते हुए हारमोनियम याद आता है। ये जिह्वा जो है, वह तालू के साथ तबले का कार्य करती है। क्योंकि कोई भी संगीत मधुर तब होता है जब तबला और हारमोनियम होता है। और जहाँ ये होंठ जिस पर श्रीकृष्ण ने भी अपनी बाँसुरी रखी वो बाँसुरी बजाने वाला कार्य करते हैं। ये तीन वाद्य तो भगवान ने हमें वाणी के लिए अंदर ही दिए हैं और साथ में स्वर। स्वर मधुर तभी होता है, जब उसको तबले का साथ मिलता है, हारमोनियम का स्वर मिलता है और उसको बाँसुरी की मधुर ध्वनि मिलती है। इस अनुसार अगर हम हर वचन का उच्चारण करें, तो वो कितना सुमधुर होगा। हर आत्मा भी उसको सुनने के लिए लालायित होगी। तो ये है, वाणी की तपस्या। इसलिए गांधीजी ने तीन बंदरों का उदाहरण दिया - बुरा न देखो, बुरा न बोलो, बुरा न सुनो। लेकिन वाणी के लिए, इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में पाँच बातें सिखायी जाती हैं और यही पाँच बातें हमारे लिए मंत्र बन जाती हैं। कम बोलो, धीरे बोलो, मधुर बोलो, सोचकर बोलो और प्रैक्टिकल बोलो। जो कर्म कर सकें, वैसा हम बोलें। तो ये पाँच बातें जब हैं, तब हमारे बोल कितने मूल्यवान हो जाते हैं। हर बोल के अंदर वज़न होता है जो व्यक्ति को जीवन पर्यन्त भी सुख-सुविधा देने के योग्य बन जाता है। मन का तप क्या है? तो कहा मन की प्रसन्नता, सरलता, गंभीरता, आत्म-संयम और अंत:करण की शुद्धि ये मन का तप है। जितना मन का तप है उतना मन सुंदर बन जाता, सुमन बन जाता है। सुमन बनाने के लिए हमें अपने मन को अमन बनाने की ज़रूरत है। हमें अपने मन के विचारों का दमन करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन मन को जितनी सकारात्मक दिशा मिलती है, उतना ही मन सुमन बन जाता है। तो जिस मन में प्रसन्नता, प्रफुल्लता, सरलता, गंभीरता समायी हुई है वो मन हमेशा सुंदर अनुभव कराने वाला बन जाता है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

अब ये तीनों प्रकार के तप के तीन भागों को सात्विक, राजसिक और तामसिक कहा जाता है। जब तीनों के अंदर भौतिक फल की इच्छा नहीं होती है, केवल ईश्वर अर्पण भाव एवं परम श्रद्धा से संपन्न हैं, वही सात्विक तप है। परंतु जब तपस्या दम्भ पूर्वक तथा सम्मान, सत्कार, पूजा कराने के लिए संपन्न की जाती है तब वह अनिश्चित और क्षणिक तपस्या राजसी तपस्या है। जो तप कष्ट उठाकर के करना पड़ता है, दूराग्रह पूर्वक और दूसरों के नाश के लिए होता है, वह तामस तपस्या मानी गयी है। ये भी संसार में देखा जाता है कि मनुष्य जब दूसरों का सुख देख नहीं पाते हैं और दूसरों के सुख को देखते हुए जब दु:खी हो जाते हैं तो मन में कई प्रकार की दुराग्रह पूर्वक भावनायें उत्पन्न होती हैं। कई बार कई लोग तो इस हद तक चले जाते हैं कि इसका किस प्रकार अनिष्ट कर दें। और उसके लिए कितना कष्ट भी उठाते हैं। तो वह तपस्या तामस तपस्या है। वह राजसिक नहीं है। - क्रमश:

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। मारूति कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित पाँच दिवसीय 'लाइफ स्किल कैम्प' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा, मारूति प्लान्ट के युनियन अध्यक्ष राजेश कुमार, अजमेर सिंह, युनियन के महासचिव दौलत सिंह तथा बच्चे।

बाँकुरा-प.बंगाल। विश्व भारती शांतिनिकेतन एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में शांतिनिकेतन के लिपिका ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल,मुम्बई। सभा में उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शेफाली, ब्र.कु. डॉ. अनंत मन्ना, प्रो. समिरण मोंडल,एच.ओ.डी.,यौगिक आर्ट एंड साइंस,वी.बी.एस.एन., प्रो. नारायण चन्द्र मोंडल,डायरेक्टर,स्पोर्ट्स,नेशनल सर्विसेस,स्टूडेंट्स वेलफेयर,वी.बी.एस.एन. तथा अन्य।

ख्यालों के आईने में...

ज़िन्दगी में ऊँचा उठने के लिए किसी डिग्री की ज़रुरत नहीं, अच्छे शब्द ही इंसान को बादशाह बना देते हैं!

किसी ने ईश्वर से पूछा कि किस प्रकार के इंसान आपके नज़दीक होते हैं? ईश्वर ने जवाब दिया - वे इंसान जो बदला लेने की क्षमता रखने के बावजूद दूसरों को माफ कर देते हैं।

जब आप एक कठिन दौर से गुज़रते हैं, जब सब आपका विरोध करने लगते हैं, जब आपको लगता है कि आप एक मिनट भी सहन नहीं कर सकते हैं,
कभी हार न मानें!
क्योंकि यही वह समय और स्थान है जब आपका अच्छा समय शुरु होगा।